International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-07-2020; Accepted: 21-07-2020; Published: 07-08-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 87-90

कोविड १९ के उपरांत ऑनलाइन शैक्षणिक परिदृश्य

विष्णु कुमार सक्सेना

कोऑर्डिनेटर, स्कूल ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

कोविड-19 के परिदृश्य में कोरोना काल में एवं कोरोना काल के पश्चात कक्षाओं का संचालन एक बहुत ही कठिन कार्य होगा | जिस तरह भारतीय शिक्षा पद्धति में शिक्षा के लिए तीन प्रकार के उद्देश्य परिभाषित किए गए हैं, उसी तरह कोविड-19 के परिदृश्य में हमें उन को मद्देनजर रखते हुए शिक्षण व्यवस्था के नए स्वरुप का विकास समुचित एवं समय के अनुरूप करना होगा तभी शिक्षण व्यवस्था का सही लाभ प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुंच पायेगा | शिक्षा के प्रथम उद्देश्य में व्यक्ति एवं चरित्र निर्माण को आत्मसात करते हुए ज्ञान के विकास को समाज कल्याण हेतु उपयोग में लाने हेतु कार्य किया जाना चाहिए | शिक्षा का दूसरा उद्देश्य अध्ययन के साथ साथ समाज का कल्याण भी है | शिक्षा के तीसरे उद्देश्य के तहत ज्ञान का विकास आता है | इसके लिए शिक्षकों का दायित्व बढ़ जाता है | इन सभी उद्देश्यों के उपरांत विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हमेशा से ही रोजगार प्राप्ति रहा है | किंतु आज के परिदृश्य में शिक्षा प्राप्ति के पश्चात रोजगार की उपलब्धि न्यून होती जा रही है | कोविड-19 के पश्चात कई नए जॉब्स की संभावना पर विचार किया जाना आज की आवश्यकता है| अतः यदि विभिन्न उपायों को कार्यान्वित किया जाता है तो काफी हद तक छात्र छात्राओं को रोजगार मिलना आसान हो जायेगा | अतः कोरोना काल के पश्चात परंपरागत कक्षाओं के संचालन के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षा को सुधार के तौर पर किया जाना अत्यंत आवश्यक है जिससे विद्यार्थी अपने पैरों पर स्वयं खड़े हो सके तथा दूसरे जरूरतमंद छात्र- छात्राओं का मार्गदर्शन भी कर सकें |

मूल शब्द : कोविड-19, ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य, कौशल आधारित प्रायोगिक कार्य, लर्निंग प्लेटफॉर्म

प्रस्तावना

स्वस्थ्य रहकर की सही तरह से विद्याध्ययन किया जा सकता है, अतः सर्वप्रथम हम यह विचार करें कि कोरोना काल में घर पर रहकर हम स्वस्थ क्यों है | हम घर में बना शुद्ध भोजन कर रहे हैं, बाहर रेस्टॉरेंट का भोजन नहीं कर रहे हैं, रेस्टॉरेंट में किस प्रकार के तेल का उपयोग किया जाता है, कितनी बार उस तेल का उपयोग होता है, उसका हमें भान नहीं रहता है | साफ़ सफाई का भी वे लोग विशेष ध्यान नहीं रखते हैं | कच्ची सब्जी की साफ सफाई का भी वे लोग ध्यान नहीं रखते हैं | खानसामे के स्वास्थय का भी वे लोग ध्यान नहीं रखते हैं | जिसका प्रतिकूल प्रभाव हमारे स्वास्थय पर पड़ता है |

पर्यावरण शुद्ध हो गया है, बाजार में वाहन प्रतिबंधित है, वायुयान रेल बस आदि वाहन नहीं चलने के कारण उनसे उत्सर्जित ऊष्मा व गैसेस नहीं होने के कारण पर्यावरण भी बिल्कुल शुद्ध है, उससे हम शुद्ध वायु में सांस ले पा रहे हैं, शुद्ध भोजन एवं शुद्ध पर्यावरण में रहने के कारण मनुष्य बीमार भी नहीं हो पा रहा है | शुद्ध भोजन तथा शुद्ध पर्यावरण में रहने के कारण व्यक्ति बीमार भी नहीं हो पा रहा है | हम घर पर रहने वाले सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हैं, विशेषकर घर की गृहिणियों के प्रति जो सुबह से शाम तक घर के सभी सदस्यों के भोजन नाश्ते आदि का इंतजाम कर रही हैं |

घर के सभी सदस्यों के पास समय होने के कारण वे अपने मन की इच्छाओं का कार्य कर रहे हैं, जैसे कोई व्यक्ति को नौकरी पर जाने के कारण समय नहीं मिल पाता था, अब वह भी घर पर रहने के कारण अपनी पुरानी इच्छाओं की पूर्ति करने की कोशिश कर रहा है, जैसे पाक कला में प्रवीण होना या कोई वाद्ययंत्र सीखना या बागवानी करना या धर्म ग्रंथों का अध्ययन करना | इनोवेटिव आइडियाज के तहत नए-नए विचार को क्रियान्वित करना, अर्थात जब व्यक्ति अपने मन से कार्य करता है तब वह अधिक प्रसन्न रहता है, और अपने आप को स्वस्थ भी महसूस करता है और उसका मन भी प्रसन्न रहता है |

कोविड-19 के परिदृश्य में कोरोना काल में एवं कोरोना काल के पश्चात भी कक्षाओं का संचालन एक बहुत ही कठिन कार्य होगा | जिस तरह भारतीय शिक्षा पद्धति में शिक्षा के लिए तीन प्रकार के उद्देश्य परिभाषित किए गए हैं, उसी तरह कोविड-19 के परिदृश्य में हमें उन को मद्देनजर रखते हुए शिक्षण व्यवस्था के नए स्वरुप का

विकास समुचित एवं समय के अनुरूप करना होगा तभी शिक्षण व्यवस्था का सही लाभ प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुंच पायेगा |

विवेचना एवं निष्कर्ष

शिक्षा के प्रथम उद्देश्य में व्यक्ति एवं चरित्र निर्माण को आत्मसात करते हुए ज्ञान के विकास को समाज कल्याण हेतु उपयोग में लाने हेतु कार्य किया जाना चाहिए | यहां पर यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि केवल ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन ही काफी नहीं है, हमें परंपरागत कक्षाओं का संचालन तो करना ही है तथा उसके साथ साथ विद्यार्थियों द्वारा असाइनमेंट सबमिशन करना, ऑनलाइन क्यूरी सेशन किया जाना, कक्षा में अध्यापन करवाए गए विषय के बारे में अपने विचारों को ऑनलाइन सबमिशन करना आदि कार्य किए जा सकते हैं | विद्यार्थियों के पास लैपटॉप या मोबाइल फोन की व्यवस्था होने पर संबंधित विषय के विभिन्न पहलुओं पर इंटरनेट पर खोज करके उन पर डिस्कशन करना तथा अपने ज्ञान को अद्यतन करना |

ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन से ज्ञान का विकास तो हो सकता है, लेकिन समाज कल्याण के कार्य हेतु विद्यार्थियों को अधिक मेहनत करने की आवश्यकता होगी | विद्यार्थी अपने आसपास रहने वाले बुजुर्गों की सूची बनाकर उनसे फोन पर संपर्क कर सकते हैं, तथा उनकी जरूरत की चीजों को समय-समय पर उन्हें आपूर्ति कर सकते हैं |

कई बुजुर्ग तथा मोबाइल फोन के ऑनलाइन परचेसिंग से अनभिज्ञ व्यक्तियों की मदद भी इस प्रकार विद्यार्थियों द्वारा की जा सकती है | आज जब मोबाइल फोन के इस दौर में विद्यार्थियों द्वारा उपलब्ध तकनीक का गलत उपयोग किया जा रहा है, अतः इस समय शिक्षकों का यह दायित्व है कि उन्हें विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने हेतु फेसबुक या व्हाट्सएप जैसी एप का उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए, इससे विद्यार्थियों में सामूहिक वैचारिक तथा अपने विचारों को प्रकट करने में भी सफलता मिलेगी , वाद विवाद प्रतियोगिताओ का सञ्चालन कक्षाओं में किया जाता हे जिससे विद्यार्थीओ के तर्क –वितर्क, बहस, विवेचन के साथ साथ वह व्यक्तित्व के निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं | आज के परिदृश्य में मोबाइल फोन पर उपलब्ध ऐप के जरिए दस से बीस विद्यार्थियों के समूह को जोड़कर एक साथ इस तरह के आयोजन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया जा सकता है | इससे विद्यार्थियों के अंतर्मुखी एवं बाह्यमुखी दोनों प्रकार की प्रतिभाओं का विकास किया जा सकता है | शिक्षा का दूसरा उद्देश्य अध्ययन के साथ साथ समाज का कल्याण भी है | परंपरागत कक्षा अध्यापन में सामाजिक जीवन के लिए जरूरी गुण सह-अस्तित्व, सामूहिकता एवं सहिष्णुता का विकास किया जाता है | आज के दौर में इंटरनेट के माध्यम से शिक्षकों द्वारा ऐसे समूह को बनाया जा सकता है, जिनके विचारों में सामंजस्य हो, तथा वह किसी एक ही प्रकार के कार्य को करने में सक्षम हो | इसके द्वारा उस समूह को सामूहिक रूप से किसी नियत दिवस एवं नियत समय पर वृक्षारोपण, जागरूकता, नुक्कड़ नाटक, आदि के लिए प्रेरित किया जा सकता है | जब इस प्रकार एक ही कार्य को करने के लिए उससे संबंधित विचारों वाले विद्यार्थी इकट्ठे होंगे तो उनमें सह - अस्तित्व एवं सामूहिकता के गुणों का विकास हो पाएगा |

शिक्षा के तीसरे उद्देश्य के तहत ज्ञान का विकास आता है | आज के इस युग में जहां सभी प्रकार के विषयों की सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध है, किंतु जिस प्रकार की सामग्री मिल रही है वह सही है या नहीं तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है या नहीं, इस पर विचार किया जाना जरूरी है| यहां पर विद्यार्थियों को अपने स्कूल या कॉलेज की पुस्तकालय में जाकर अध्ययन करना होगा तथा उस विषय से संबंधित अद्यतन ज्ञान को ऑनलाइन खोज सकते हैं तथा शिक्षकों का यह दायित्व बन जाता है कि विद्यार्थियों को इस प्रकार से असाइनमेंट देवें जिसमें उन्हें पुस्तकालय में भौतिक रूप से अध्ययन करना भी जरूरी हो एवं अद्यतन ज्ञान हेतु ऑनलाइन भी खोजना जरूरी हो | आज जो विद्यार्थियों में लेखन हेतु कट एवं पेस्ट की तकनीक तेजी से विकसित हो रही है, उसे सर्वप्रथम हमें समाप्त करना होगा | इसके लिए शिक्षकों का दायित्व बढ़ जाता है |

इस हेतु त्वरित विषय पर विद्यार्थियों को अपने विचारों को प्रकट करने हेतु ऐसे निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है, जिसमें उन्हें अपने विचारों को लिखकर प्रकट करना होगा तत्पश्चात जिन विद्यार्थियों का कंटेंट समान होगा उसे पुनः निबंध लिखने के लिए प्रेरित किया जावेगा | इस नियम से सभी विद्यार्थियों को अपने अपने विचार स्वयं प्रकट करने होंगे तथा उन्हें स्वयं लिपिबद्ध कर अपने निबंध में शामिल करना होगा |

इन सभी उद्देश्यों के उपरांत विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हमेशा से ही रोजगार प्राप्ति रहा है | किंतु आज के परिदृश्य में शिक्षा प्राप्ति के पश्चात रोजगार की उपलब्धि न्यून होती जा रही है | कारण बहुत साफ है कि विद्यार्थी केवल किताबी ज्ञान की परीक्षा उत्तीर्ण कर रहे हैं और उन्हें किसी भी प्रकार के कौशल की प्राप्ति नहीं हो रही है | परंपरागत बीए, बीएससी, बी कॉम जैसे विषयों में जहां प्रायोगिक कार्य की कम आवश्यकता होती है, एवं इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम में प्रायोगिक कार्य की बहुलता होती है परंतु फिर भी विद्यार्थी पारंगत नहीं हो पा रहे हैं, क्योंकि उनका एक ही उद्देश्य है, परीक्षा उत्तीर्ण करना जिसमें वे ज्यादा से ज्यादा अंक लाकर सफल तो होते हैं, किंतु उन्हें रोजगार के लिए संघर्ष करना पड़ता है| अर्थात कहीं ना कहीं शिक्षण व्यवस्था में भारी चूक हो रही है | उदाहरण के लिए विद्यार्थी कम्युनिकेशन स्किल विषय में उत्तीर्ण तो हो जाता है किंतु उसे सही रूप में आवेदन का प्रारूप लिखना भी नहीं आता है| यहां ध्यान देने की जरूरत है कि हमें कुछ विषयों में प्रायोगिक कार्य प्रारंभ करने होंगे एवं उनका आकलन केवल और केवल प्रायोगिक

विषयों को सफलतापूर्वक करने के पश्चात विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की जाएगी|

यहां पर विद्यार्थियों को दो भागों में बांटा जा सकता है| एक वे जो केवल डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं एवं दूसरे जो कौशल आधारित (स्किल बेस्ड) प्रायोगिक कार्य के साथ डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं जिससे उन्हें रोजगार मिलने में सहायता प्राप्त हो सके| यहां पर कौशल आधारित प्रायोगिक कार्य परंपरागत विषयों में परिभाषित किए गए कार्य से सर्वथा भिन्न है| इसका तात्पर्य ऐसे कौशल आधारित प्रायोगिक कार्य से है जो रोजगार में सहायक हो| कौशल आधारित प्रायोगिक कार्य को परिभाषित करते समय हमें विद्यार्थियों की रूचियों को ध्यान में रखना होगा| विषय वार इसको परिभाषित करना समय की मांग अनुसार किया जावेगा| वर्तमान में सर्वाधिक विद्यार्थी बीए, बीएससी, बीकॉम, पॉलिटेक्निक, एमए, एमएससी, एमकॉम में अध्ययन करते हैं इनमें मुख्य रूप से उन विद्यार्थियों को चुनना होगा जो बीए, बीएससी, बीकॉम ,या एमए, एमएससी, एमकॉम विषयों में अध्ययन करते हैं अतः उनके लिए कौशल आधारित प्रायोगिक कार्य को परिभाषित करना होगा | यहां यह भी ध्यान में रखना होगा कि कौशल आधारित प्रायोगिक कार्य का चयन करने में विद्यार्थियों की रुचि महत्वपूर्ण होगी |

शासन द्वारा कई विश्वविद्यालयों में दीनदयाल उपाध्याय कौशल विकास केंद्र की स्थापना की गई है |इसमें पाठ्यक्रमों की संख्या को और विस्तृत करने की आवश्यकता है | जब विद्यार्थी किसी उपाधि हेतु अध्ययन करता है, तब अपनी इच्छा अनुसार एक से अधिक कौशल आधारित (स्किल्ड बेस) प्रायोगिक कार्य अपने विषय के साथ ले सकता है| यहां पर यह पूर्णतया स्पष्ट है कि प्रायोगिक कार्य में उसे केवल सैद्धांतिक परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होना है, उसे वस्तुतः कौशल आधारित प्रायोगिक कार्य के हुनर को आत्मसात करना है| अर्थात यदि कोई विद्यार्थी कार्पेंट्री कार्य को चुनता है तो उसे तभी उत्तीर्ण माना जावेगा जब वह इस विधा में निपुण हो जावेगा तथा वह इसके प्रायोगिक कार्य का प्रदर्शन कर देगा| जिस तरह प्राचीन काल में गुरुकुल पद्धति में विद्यार्थी तब तक उत्तीर्ण नहीं होता जब तक वह निपुण ना हो जावे| इसका लाभ विद्यार्थियों को उनके रोजगार में सहायक होगा |

कोविड-19 के पश्चात कई नए जॉब्स की संभावना पर विचार किया जाना आज की आवश्यकता है| उदाहरण के लिए ऑनलाइन परचेसिंग में डिलीवरी बॉय सामान की डिलीवरी करता है| इस समय दुकान में कार्य करने वाला सेल्समैन गौण हो जाता है | अतः डिलीवरी बॉय को दोनों व्यक्ति के गुणों डिलीवरी बॉय तथा सेल्समैन/ टेक्नीशियन के गुणों को आत्मसात करना होगा अर्थात यदि किसी इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट का ऑर्डर किया जाता है, तब उसे उस उपभोक्ता के घर में उसे इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट इंस्टॉल करना भी आना चाहिए | इसी तरह रूफटॉप गार्डन पर उगाई जाने वाली सब्जियों के कौशल में भी विद्यार्थियों को प्रवीण किया जा सकता है | इससे कुछ समय पश्चात कई घरों में जहां पर छतों की व्यवस्था है, उन्हें अपनी सब्जियां स्वयं ही मिल जाया करेंगी | बैंगलोर व अन्य शहरों में इस कार्य के लिए कई समूह कार्य कर रहे हैं जो कि उचित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं |

कॉलेज एवं विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र छात्राओं हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा विभिन्न प्रकार के तैयार किए गए लर्निंग प्लेटफॉर्म विकसित किए गए हैं| इनमें स्वयं, ई-बस्ता, दीक्षा, नेशनल डिपाजिट ऑफ ओपन एजुकेशन, ईपीजी पाठशाला, स्पोकन ट्यूटोरियल प्रोजेक्ट, आईआईटी मुंबई, नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी एनहांस लर्निंग (एनपीटीईएल) आदि प्रमुख है| उपरोक्त दर्शाए गए लर्निंग प्लेटफॉर्म प्रोग्राम का सुव्यवस्थित उपयोग करने हेतु विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र छात्राओं हेतु प्रायोगिक प्रयोगशाला आईटी सेंटर के रूप में विकसित किया जा सकता है | जिसमें पचास-साठ कंप्यूटर स्थापित किए जावे, जिसमें इंटरनेट कनेक्शन की सुलभता हो | देश के कुछ विश्वविद्यालय में इस प्रकार के आईटी सेंटर वर्तमान में कार्य भी कर रहे हैं | प्रथम बार इन कंप्यूटर में सभी प्रकार के लर्निंग मॉडल्स को इंटरनेट के माध्यम से स्टोर किया जावे ताकि जब इंटरनेट की सुलभता न हो तो भी विद्यार्थी इनका भरपूर लाभ उठा पाए|

इस आईटी सेंटर में सभी विषयों के विद्यार्थियों की एक - एक घंटे की प्रायोगिक कक्षा अनिवार्य रूप से लगाई जावे, जिससे विद्यार्थी अपने विषय से संबंधित विषयों के बारे में उपलब्ध वीडियो के माध्यम से अपने ज्ञान को बढ़ा सकें | टाइम टेबल में इसे एक विषय के रूप में समाहित किया जावे एवं सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति इसमें अनिवार्य होगी | सप्ताह के पांच दिन विद्यार्थी जो भी वीडियो आईटी सेंटर में देखेंगे उनकी रिपोर्ट छठवें दिवस मे संपूर्ण रूप से बनाकर संबंधित शिक्षकों को सौंपेंगे | इस रिपोर्ट में यह विशेष रूप से समाहित किया जावेगा कि विद्यार्थी ने किस विषय पर वीडियो देखा, उसे क्या रुचिकर लगा |इसमें किसी भी प्रकार के मॉडिफिकेशन या अपडेशन की आवश्यकता है, तथा इसे विद्यार्थी और अच्छे स्वरूप में मॉडिफाई कर सकता है | यदि विद्यार्थी के पास घर में इंटरनेट की सुलभता है तो वह घर पर रहकर भी इन लर्निंग मॉडल्स का लाभ उठा सकता है| इसी तरह स्पोकन ट्यूटोरियल प्रोजेक्ट आईआईटी मुंबई के द्वारा प्रदत्त किए गए विभिन्न विषयों के मॉड्यूल द्वारा विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ-साथ मॉड्यूल में दिए गए विभिन्न विषयों में पारंगत हो रहे हैं, तथा आईआईटी मुंबई द्वारा उन्हें इस हेतु सर्टिफिकेट भी प्रदान किया जा रहा है जिससे उन्हें जॉब प्राप्त करने में आसानी हो रही है |

उपसंहार

वर्त्तमान में संचालित परमपरागत कक्षाओं के सञ्चालन के साथ साथ यदि उपरोक्त दर्शाये गए विभिन्न उपायों को विश्वविद्यालय द्वारा

कार्यान्वित किया जाता है तो इस प्रकार किये गए उपाय काफी हद तक छात्र छात्राओं को रोजगार दिलाने में सहायक हो सकेंगे | साथ है कई विद्यार्थी स्वयं का रोजगार स्थापित करने में भी सक्षम होंगे| अतः कोरोना काल के पश्चात परंपरागत कक्षाओं के संचालन के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षा को सुधार के तौर पर किया जाना अत्यंत आवश्यक है जिससे विद्यार्थी अपने पैरों पर स्वयं खड़े हो सके तथा दूसरे जरूरतमंद छात्र- छात्राओं का मार्गदर्शन भी कर सकें |

सन्दर्भ सूची

1. भारत में शिक्षा के उद्देश्यों का महत्व- vikaspedia portal
2. स्पोकन ट्यूटोरियल प्रोजेक्ट आईआईटी मुंबई - https://spoken-tutorial.org/
3. नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी एनहांस लर्निंग (एनपीटीईएल) – nptel.ac.in
4. दीनदयाल उपाध्याय कौशल विकास केंद्र – National Skill Development Corporation